अपने अंदर की नकारात्मकताओं को मारना ही असली जिहाद है .....

(Padhiye मिखाइल उस्मानोव Ki Kahani)

https://www.facebook.com/Stories-of-a-Holy-Mother-and-Her-Countless-Children-285274315480068 9/?modal=admin_todo_tour

(Like the Page above to get new stories on your Facebook Wall)

English Link Story Part 1:

https://www.facebook.com/permalink.php?story_fbid=2935394913202179&id=2852743154800689&__tn__=K-R

English Link Story Part 2:

https://www.facebook.com/permalink.php?story_fbid=2969216733153330&id=2852743154800689&__tn__=K-R

पहला भाग

मुझे पता नहीं था कि मेरी प्रेयर्स इतनी जल्दी सुन ली जायेंगी .....

;मिखाइल उस्मानोवए बदला हुआ नामए स्टोरीज ऑफ होली मदर एंड हर काउंटलेस चिल्ड्रन ग्रुप से साभार)

मैं अपने सहजयोग से पूर्व के जीवन से अपनी कहानी को प्रारंभ करूंगा। मेरा जन्म पूर्वी यूरोप के एक रूढ़िवादी मुस्लिम परिवार में हुआ था। वैसे मैं पाँच वक्त का नमाजी तो बिल्कुल नहीं था। कभी कभार मैं सिगरेट और शराब भी पी लिया करता थाए लेकिन इसके बावजूद भी खुदा से जुड़ी हुई हर बात मेरे लिये बहुत ज्यादा मायने रखती थी।

वैसे इस पूरे विश्व में धर्म के क्षेत्र में जिस प्रकार से सब कुछ घटित हो रहा थाए उससे मैं मन ही मन मैं बेहद नाखुश था। धार्मिक उन्मादए जिहाद और आतंकवाद की बातें मुझे बेचैन कर दिया करती थींए जिनका उत्तर मैं अपने मन में ही ढूंढने का प्रयत्न करता। ये सब मैं इस हद तक किया करता कि खुद ही परेशान हो जाया करता। वर्ष २००६ में एक दिन मैं सुबह सवेरे ५ बजे उठकर पूरी शिद्दत से प्रेयर करने लगा कि हे परवरदिगार अब आप ही मुझे सही राह दिखलाइये। आप ही मुझे सत्य का ज्ञान करवाइये क्योंकि ये काम आप ही कर सकते हैं। लेकिन मुझे क्या पता था कि मेरी प्रेयर्स इतनी जल्दी सुन ली जायेंगीए क्योंकि कुछ ही दिनों में मुझे मेरा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने वाला था।

Stories of a Holy Mother & Her Countless Children

वर्ष २००१ में मुझे मेरा एक युक्रेनियन दोस्त मिला जिसके साथ मैं पार्टनरशिप में काम कर रहा था। उस समय मेरी उम्र मात्र १६ वर्ष की थी और उन दिनों मैं बेल्जियम में था। एक दिन बातचीत करते हुये मैंने उससे पूछा कि खुदा और धर्म के बारे में उसके विचार क्या हैंः उसने लापरवाही से कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि खुदा है ही नहीं और ये पूरा संसार सूर्यए चंद्रमा और हमारे अस्तित्व की किसी रासायनिक क्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है।

खुदा के मामले में मेरे कट्टर विचारों के कारण अचानक से मैं उस पर नाराज हो उठा। मैंने नाराज होते हुये ही उससे पूछा कि वह इस तरह की बात भी कैसे कर सकता हैः परमात्मा से जुड़े हुये मामले में मैं ऐसे लोगों को बिल्कुल भी सहन नहीं कर सकता थाए जिनकी सोच इस तरह की होती थीए मेरे सामने इतने खुलकर खुदा के अस्तित्व पर सवाल खड़ा करना तो बहुत दूर की बात थी। मैंने अपने मित्र को चेतावनी दी कि भविष्य में उसे मेरे सामने ऐसे विचार बिल्कुल भी व्यक्त नहीं करने चाहिये। मुझे लगा कि उसके सामने खुदा की बातें करना एकदम बेकार थीं। वह चुप हो गया और बाद में अपने देश युक्रेन चला गया।

इसके बाद वर्ष २००७ में मैं भी युक्रेन में था। मुझे अपने उसी मित्र से बात करने की इच्छा हुई और मैंने उससे कॉन्टॅक्ट किया। हमने कहीं पर बैठकर मिलने का प्लान बनाया। अपनी मीटिंग के दौरान उसने मुझे बताया कि वह आजकल सहजयोग नाम की ध्यान की पद्धति को प्रैक्टिस कर रहा है। उसने मुझे भी वह करने को कहाए जिसको वह सेल्फ रियलाइजेशन लेना कह रहा था। मैं उससे ये कहने में झिझक रहा था कि मेरे मुस्लिम परिवेश को देखते हुये उसे मेरे सामने ऐसे प्रस्ताव नहीं रखने चाहिये। उसने स्वयं ही मुझे बताया कि मुस्लिम लोग भी सहजयोग कर सकते हैंए ये उनके लिये भी अच्छा है। उसने मुझे बताया कि पैगम्बर मोहम्मद खुदा का ही स्वरूप थे और फातिमा बीबीए अलीए हसन और हुसैन को भी हमारे रोजमर्रा के जीवन में उतना ही सम्मान दिया जाना चाहियेए जितना अन्य किसी को। उसकी नास्तिक विचारधारा को देखते हुये मुझे उसकी ये बातें काफी अविश्वसनीय लग रहीं थीं। यहाँ तक कि ये जानकर मुझे बड़ी हैरानी हो रही थी कि उसे ये नाम भी मालूम थे। मन ही मन मैं सहजयोग ध्यान धारणा से उसके अंदर आये इस बदलाव को बहुत सराह रहा था। मैंने उसके सहजयोग ध्यान की बात को स्वीकार कर लिया और कुछ बड़प्पन के भाव से कहा कि मुझे नहीं मालूम दोस्त कि तुम कौन सी योग साधना कर रहे हो पर जो कुछ भी तुम कर रहे होए उसे करना जारी रखो। मेरे जैसे किसी भी रूढ़िवादी मुसलमान के लिये इतना कह देना भर ही बहुत बड़ी बात थी क्योंकि मेरे खयाल था कि नास्तिक होने से अच्छा तो उसका कुछ भी करना ज्यादा बेहतर होगा।

मेरा मित्र अपनी यात्रा के बारे में मुझे बताता रहा और वह मेरी और उसकी उस मीटिंग के बारे में भी बातें करता रहा, जिसमें उसने अपने नास्तिक विचारधारा के बारे में मुझे बताया था और मेरे क्रोध का सामना भी किया था। उसने सर्वशक्तिमान परमात्मा पर विश्वास शुरू करने का श्रेय मुझे दिया। उसने

बड़े खुले मन से कहा कि तुम अल्लाह के बारे में मुझे बताया करते थे न और इसमें बिल्कुल भी संदेह नहीं कि तुम एकदम सही थे क्योंकि मैंने भी अब उस सर्वशक्तिमान परमात्मा पर विश्वास करना शुरू कर दिया है। मैं एक बार फिर इनकार करने की मुद्रा में ही सही परंतु सहजयोग के बारे में जानने को उत्सुक हो उठा और उससे इस विधा के बारे में बताने को कहने लगा। जैसे ही उसने बताया कि सहजयोग श्रीमाताजी निर्मला देवी के द्वारा प्रारंभ किया गया जो अब उसकी गुरू भी हैं। उसने मुझसे कहा कि मुझे ये सब जानने से पहले उसके माध्यम से अपना आत्मसाक्षात्कार ले लेना चाहिये। उसने कहा कि पहले अल्लाह से प्रे करो और उनसे अपने प्रश्नों के उत्तर लो और साथ ही श्रीमाताजी के फोटोग्राफ की ओर नजरें गड़ाये रहो। मैंने उससे पूछा कि वह क्यों मुझसे श्रीमाताजी के फोटो की ओर आँखे गड़ाये रहने को कह रहा है।

मेरा मित्र मेरे साथ काफी सावधानीपूर्वक बातें कर रहा था और परमेश्वरी माँ के बारे में ज्यादा विस्तार से बताने से बच रहा था क्योंकि वह मेरे स्वभाव और मेरी धार्मिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह से जानता था। अचानक उसने अपने प्रस्ताव को बदल दिया और कहा कि मुझे केवल अल्लाह से प्रार्थना करनी चाहिये और कहा कि यदि मुझे फोटोग्राफ की ओर देखने में किसी प्रकार की असुविधा हो रही हो तो फोटो की ओर न देखने को कहा। मैंने उसका ये प्लान स्वीकार कर लिया और खुदा की प्रेयर करने के लिये उसके निर्देशों का अनुसरण करना शुरू कर दिया और साथ ही भरसक ये प्रयत्न किया कि मैं श्रीमाताजी के फोटोग्राफ की ओर न देखूं, लेकिन मेरी लाख कोशिशों और जिद्दी स्वभाव के बावजूद भी मेरा ध्यान उनके फोटोग्राफ की ओर ही चला जा रहा था। अंततः वहीं मैंने अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया और गहरे ध्यान में चला गया। मुझे अपनी हथेलियों पर बहुत ज्यादा चैतन्य का अनुभव हुआ।

हालाँकि ये पहली बार नहीं था जब मुझे अपनी हथेलियों पर ठंडी चैतन्य लहरियों का अनुभव हुआ हो। मुझे पहले भी इसका अहसास हुआ करता थाए कभी मस्जिद में और कभी घर पर भी और आश्चर्यजनक रूप से कभी तो तब भी जब सारे दरवाजे खिड़कियाँ तक बंद होते थे। (बाद में सहजयोग में आने के बाद मुझे अहसास हुआ कि परमचैतन्य मुझे कुछ बिंदुओं को जोड़ने में सहायता कर रहा था। अतः मैं कहूंगा कि इससे मैं बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं हुआ। इस पूरी घटना के जिस पहलू से मैं ज्यादा प्रभावित हुआ वह था एक प्रकार की अगाध शांति जो मुझे अनुभव हुईए जिस तरह से मेरे मन की सफाई हुई और जिस तरह से मैंने अपने अंदर तक शांति और आनंद की अनुभूति की।

अब मैं आपको ६ महीने आगे की बात बताता हूँ जब मेरा युक्रेनियन दोस्त और मैं एक बार फिर मिले। उसने मुझे सहजयोग के ध्यान के कार्यक्रम के लिये बुलायाए जहाँ पर वह कोऑर्डिनेटर था। मैं शुरूआत में थोड़ा हिचकिचा रहा थाए लेकिन उस पक्के नास्तिक को मेडिटेशन के कार्यक्रम को कोऑर्डिनेट करते हुये देखने की उत्सुकता भी मेरे मन में बनी हुई थी, जिसमें वह लोगों को परमात्मा से कनेक्ट करवा रहा था। इस सम्मेलन में महिलाओं ओर बुजुर्गों की बड़ी तादाद काबिले तारीफ थी।

इस कार्यक्रम की सेटिंग वैसी नहीं थी, जिसकी मैंने कल्पना की थी। किसी पूजा स्थल के लिये ये सेटिंग थोड़ी अजीब सी थीए कम से कम मेरे हिसाब से। फिर भी एक घबराये हुये व्यक्ति के लिये उन लोगों के चेहरों की चमक को नजरअंदाज करना तो काफी कठिन थाए जो वहाँ पर बैठे थे। उनके चेहरे आनंद और खुशी से दमक रहे थे। उसी समय श्रीमाताजी का रिकॉर्डेड लेक्चर लगा दिया गयाए जिसको मैंने बड़े ध्यान से सुना और जो मुझे बड़ा ही प्रभावशाली लगा। मुझे महसूस हुआ कि ये मातृत्व से परिपूर्ण महिला बहुत ही ज्यादा दृढ़ महिला हैं और जो कुछ भी वह बताना चाह रही हैंए वह उनको सचमुच मालूम है। सबसे ज्यादा जिस चीज ने मुझे प्रभावित किया उनके लेक्चर में उन सब बातों को बताया गया था, जिनके बारे में मैं उन दिनों जानना चाहता था।

इसके बाद कुछ और साल बीत गये और मैंने अपने इस दोस्त को वर्ष २००६ तक बिल्कुल नहीं देखा। ये इसी साल के दिसम्बर के महीने की बात है, जब मैं अपने कुछ और दोस्तों के साथ नया साल मनाने के लिये बेल्जियम जाना चाहता था। मैंने अपने इस युक्रेनियन दोस्त को भी उसके प्लान्स के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह सहजयोग की पूजा अटैण्ड करने के लिये रोम जा रहा था। मैंने उससे पूछा कि ये पूजा क्या चीज होती हैः उसने इसके बारे में कुछ ज्यादा तो नहीं बताया परंतु उसने मुझसे कहा कि अगर मैं चाहूँ तो मैं भी इस पूजा को अटैण्ड करने के लिये उसके साथ चल सकता हूँ क्योंकि बेल्जियम रोम से ज्यादा दूरी पर नहीं है। मेरे मन में बहुत सारे प्रश्न थेए जिसमें से पहला था कि क्या श्रीमाताजी वहाँ पर आ रही हैंः मन ही मन मैं वहाँ जाने का विचार करने लगा। मैं वहाँ श्रीमाताजी से मिलने और उनसे मोहम्मद साहब के बारे में कुछ प्रश्न पूछने की सोच ही रहा था ताकि मैं अपने मन के संशय को फर्स्टहैण्ड ही मिटा सकूँ। आज जब मैं उन दिनों के बारे में सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि उस समय मैं कितना अनाड़ी था। अपने दोस्त को मैंने पूजा में जाने का कोई कमिटमैंट नहीं दिया परंतु मैंने उससे कहा कि जब वह रोम जायेगा तो मुझे फोन अवश्य कर ले।

जब मैं बेल्जियम पहुँचा तो मेरे दोस्त ने मुझको फोन किया और मुझसे मेरे प्लान्स के बारे में पूछाए जबकि मैं निश्चय कर चुका था कि मैं रोम नहीं जाऊंगा परंतु पता नहीं कैसे पर मैंने उससे रोम आने के लिये हाँ कहा। मैंने उसी शाम अपनी फ्लाइट का टिकट बुक किया (बेल्जियम--प्राग--रोम)ए लेकिन इसके तुरंत बाद ही मैं बीमार हो गया। मेरी आँखे एकदम सुर्ख लाल हो गईं और मुझे तेज बुखार (४० ब्१०४ थ्द्ध भी हो गया। मेरे सभी दोस्त मुझे लड़खड़ाते हुये चलता देख रहे थे और मुझे रोम न जाने की सलाह दे रहे थे। लेकिन मेरे अंदर कोई आवाज कह रही था कि मुझे वहाँ जाना ही होगा चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय।

यदि मुझे किसी से प्रेरणा लेने की आवश्यकता पड़े तो मुझे अपनी एक आंटी की याद है, जो एकदम संतों जैसी थीं और मुझे बहुत ही ज्यादा प्रिय थीं। इस समय भी वही मेरे काम आँईं। मुझे एक बार

की याद है जब आंटी हज के लिये मक्का जाने से ठीक पहले बीमार पड़ गईं थीं। मैं तब छोटा सा बच्चा ही था। मुझे याद है कि आंटी ने तब कहा था कि खुदा उनको पाक साफ बना कर हज के लिये तैयार कर रहा है और इसके बाद वे हज के लिये चली गईं। मेरे अंदर के आस्तिक ने मुझे कहा कि पूजा से पहले श्रीमाताजी मुझे भी इसी तरह से स्वच्छ या पाक साफ कर रहीं हैं।

मैंने कई संकल्पों के साथ अपनी फ्लाइट पकड़ी, हालांकि फ्लाइट में मेरी हालत और बिगड़ती चली गई। ये महज एक संयोग ही था कि मेरे पीछे की सीट पर कुछ रूसी सहजयोगी बैठे हुये थे। मैं उनकी भाषा को पूजा और श्रीमाताजी जैसे शब्दों से समझ गया था। मैंने ये बात कंफर्म करने के लिये पीछे मुड़कर देखा कि क्या वे लोग भी पूजा में जा रहे थेः मैंने अपनी जेब से श्रीमाताजी का फोटोग्राफ निकाला और उसे उन लोगों को दिखाया (मेरे दोस्त ने मुझे ये फोटो दिया थाए परंतु जिसको मैं पहले कभी भी जेब से निकाल ही नहीं पाया था। मैं अपना हाथ जेब में डालता और सोचता अरे आज फिर से मैं इस फोटो को घर पर छोड़ना भूल गया और इस तरह से ये फोटो मेरी जेब में दो महीने से पड़ा हुआ था)। मेरी हालत देख कर वे लोग कुछ घबरा गये। मैंने उनको बताया कि मैं सहजयोगी नहीं हूँ परंतु मेरे दोस्त ने मुझे पूजा अटैण्ड करने के लिये आमंत्रित किया है। लेकिन मुझे तेज बुखार हो गया है। उन्होंने मुझे बंधन दिये और मेरी तबीयत में काफी सुधार आ गया। दो घंटे की फ्लाइट के दौरान वे लोग सहजयोग की ही बातें करते रहे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं सीधे उनके होटल आ सकता हूँ और वे मेरे लिये कोई व्यवस्था कर देंगे। यद्यपि एक अजनबी के लिये मैं उनके इस प्रेम को बिल्कुल भी नहीं समझ सका पर फिर भी मुझे उनका ये प्रेममय व्यवहार बहुत ही अच्छा लगा। मैंने उनसे कहा कि मैं उनके होटल कल सुबह आऊंगा।

अगली सुबह जब मैं सोकर उठा तो बीमारी के कारण मेरी आँखे चिपक गई थीं। मुझे अपनी आँखे खोलने के लिये अपनी हथेलियों का उपयोग करना पड़ा। वैसे तो मुझे अभी भी बुखार था लेकिन मन ही मन मुझे बड़ा अच्छा भी लग रहा था। क्योंकि मैं खुद से खड़ा ही नहीं हो पा रहा था इसलिये मैंने अपने युक्रेनियन दोस्त को फोन किया और उससे अनुरोध किया कि क्या वह मुझे लेने के लिये होटल आ सकता हैः मेरे दोस्त ने बड़ी मेहरबानी की और मुझको लेने के लिये कुछ रशियन सहजयोगियों के साथ आया और मुझे होटल से लेकर के गया। पूजा शहर से थोड़ी दूरी पर आयोजित की गई थी। पूजास्थल पर पहुँचने के बाद हमने अपनी कार पार्क की और लगभग २०० मीटर तक पैदल ही चले।

ये देखना आश्चर्यजनक था कि कुछ मिनट पहले तो मुझे चलने में भी तकलीफ हो रही थी और इस समय मैं इतनी दूर पैदल ही चल कर आ गया। यही नहींए मुझे तब और भी हैरानी हुई जब मैं पूजा स्थल तक पहुँचा तो बिल्कुल ठीक महसूस कर रहा था। मैं खुद को एक बच्चे जैसा महसूस कर रहा था, जो किसी बढ़िया सी जगह अपनी माँ के साथ जा रहा हो और जहाँ पर उसके लिये बड़ा सा सरप्राइज रखा गया हो। आध्यात्मिक रूप से मैं सातवें आसमान पर था और उस क्षण को मैं फोटोग्राफ्स

की तरह से याद कर सकता हूँ कि पूजा के स्थान के दो कदमों में ही मैं चैतन्य के सागर में नहा उठा था। मुझे गहन आनंद की अनुभूति हो रही थीए जिसको मैंने पहले कभी भी महसूस नहीं किया था। ये बस एक तरह के आनंद की अनुभूति थी, जिसमें मैं सराबोर हो चुका था और एकदम निःशब्द हो चुका था। मैंने तुरंत अल्लाह पाक से दुआ की और कहा कि केवल आप ही मुझे इस चीज के बारे में समझा सकते हैं और आप ही मुझे इस तरह का अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

वहाँ पर ५००० योगी पूजा के लिये आये हुये थे। मेरी इस भ्रम लेकिन आनंदातिरेक की अवस्था में मैंने स्वयं को भरोसा दिलाया कि बैठ जाओ और खुद ही ये सब देखो। मैंने अपने दोस्त को उसकी वॉलंटियर के रूप में ड्यूटी करने को कहा। इसके बाद फिर से ....जी हाँ फिर से कुछ अजीब सी घटना घटी। एक खास दिशा से एक कमरे से मुझे ऊर्जा के अजस्त्र भंडार का अनुभव हुआ जो मेरी ही ओर आ रहा था। मेरा दिमाग बिना किसी पूर्वाग्रह के साक्षी बन चुका था। मेरा दिमाग एकदम सहज हो चुका था। इसी अवस्था में मैंने निष्कर्ष निकाला कि वाइब्रेशन्स का ये तूफान संभवतः साक्षात श्रीमाताजी से ही आ रहा था। कुछ समय बाद मेरा दोस्त वापस आ गया और मैंने उससे पूछा कि कि क्या उस दिशा में ही श्रीमाताजी बैठी हुई हैंं उसका जबाब हाँ में था। उसने हैरानी भरी नजर से मुझे देखते हुये कहा कि पर तुम्हें ये बात कैसे पता चलीं .... क्रमशः

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

दूसरा भाग

अपने अंदर की नकारात्मकताओं को मारना ही असली जिहाद है ....

(मिखाइल उस्मानोव)

मेरे जीवन में श्रीमाताजी ऐसे समय पर आईं जब मैं रूस के चेचेन्या प्रांत में जाकर जिहाद छेड़ने की सोच रहा था। उस समय श्रीमाताजी ने न केवल मेरा जीवन बचाया बल्कि उन्होंने मेरे जीवन को एक नया और ताजगी से भरा दिव्य अर्थ दिया। आज मुझे मालूम है कि सच्चा जिहाद तो ध्यान करना, फुटसोक करना और आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से अपने अंदर के राक्षसों को मारना है।

यदि किसी धर्मविशेष के लोग जैसा कि वे दावा करते हैं कि उनको ही इस जीवन के बाद स्वर्ग की प्राप्ति होगी तो फिर खुदा ने दूसरे समुदायों को बनाया ही क्यों? मैं अपने तथाकथित धर्म के लोगों से पूछना चाहता हूँ कि सहजयोग में आने से पूर्व मैं निसंदेह खुदा के बारे में जानना चाहता था और मुझे अपने पैदायशी धर्म की सभी बातें अत्यंत गहन और ज्ञानवर्धक लगा करती थीं। परंतु मैं खुदा के बारे में इससे भी और ज्यादा जानना चाहता था और अपने धर्म से संबंधित बातों को भी गहनता से समझना चाहता था।

वे लोग (धार्मिक लीडर्स) मेरी धर्म को जानने की लालसा को देख कर खफ़ा हो जाया करते थे, अक्सर वे मुझसे नाराज हो जाते, जो मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि मैं तो उनसे खुदा पाक से जुड़े और उनकी शक्ति को अपने अंदर महसूस करने से संबंधित बहुत ही साधारण प्रश्न ही पूछा करता था।

मेरे कुछ प्रश्न इस प्रकार से होते कि मेरा धर्म तो मात्र 1400 वर्ष पुराना है तो फिर मेरे धर्म के आने से पहले मृत्यु के बाद आत्मायें कहाँ जाया करती थीं या कुछ इस तरह के कि हम एक दिशा विशेष की ओर मुँह करके ही क्यों इबादत किया करते हैं? कम से कम शब्दों में मैं यही कह सकता हूँ कि इन प्रश्नों के उत्तर जानने की मेरी उत्सुकता मेरे सामने वाले व्यक्ति को खीझ से भर देती थी। स्वयं मेरे पिता ही इस चीज को पसंद नहीं किया करते थे और वे कहते थे कि इस तरह की शंकायें इन धार्मिक शिक्षाओं पर ही शंका करने के समान हैं। लेकिन अपने अंदर मैं कहीं सत्य को जानना चाहता था क्योंकि मैं जानता था कि खुदा पाक कभी भी सत्य को छिपायेंगे नहीं। व्यक्तिगत रूप से मुझे हमेशा मेरी धार्मिक पुस्तकों की शिक्षायें काफी गहन लगा करतीं थीं, लेकिन मुझे अपने धर्म को मानने वालों का व्यवहार इन शिक्षाओं के एकदम उलट लगा करता था। ये देख कर मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरे धर्म की बातें बिल्कुल भी वैसी नहीं हैं जैसी उन्हें वास्तव में होना चाहिये और इसीलिये इन युद्ध, दहशतगर्दी और जिहाद की बातों से मेरे अंतरमन में बड़ी बेचैनी होने लगती थी।

ब्रिटिश म्यूजिशियन कैट स्टीवॅन्स के शब्द मेरे अंदर कहीं गूंजने लगे जो इस तरह से हैं.... या परवरदिगार मुझे पहले आपने इस्लाम की तालीम दी और बाद में मुझे मुसलमान बनाया। यदि मैं इस्लाम से पहले मुसलमानों से मिला होता तो आज मैं मुसलमान तो बिल्कुल नहीं होता। यद्यपि मेरे इन विचारों से संभवतः बहुत ही कम लोग सहमत होते। मैं मानव निर्मित मुद्दों जैसे सुन्नियों द्वारा शियाओं को गैर-मुस्लिम कहने जैसी चीजों से बेहद निराश और दुखी था। ये बातें हमेशा मेरा पीछा किया करतीं थीं क्योंकि ये वो बातें थीं, जिनका पैगम्बर मोहम्मद हमेशा विरोध किया करते थे। पैगम्बर साहब ने कहा था कि किसी को भी ये कहने का हक नहीं है कि कौन मुसलमान है और कौन नहीं। केवल अल्लाह पाक को ही पता है कि कौन सच्चा मुसलमान है। यहाँ तक कि धार्मिक लीडर्स भी शियाओं को गैरमुस्लिम मानते हैं। मेरा मानना है कि धार्मिक लीडर्स यदि सचमुच अपने साथी मुस्लिम भाइयों के बारे में चिंतित हैं तो वे कम से कम ये कह सकते हैं कि हमारे शिया भाई अन्य मुसलमानों

से कुछ हट कर हैं और कुछ समय बाद वे अपने आप सही राह पर आ जायेंगे। लेकिन मुझे कोई भी ऐसा आदमी नहीं मिला जो कह सके कि सभी मुसलमान अपने सूक्ष्म धार्मिक विश्वासों के बावजूद भी हमेशा भाई भाई ही हैं। मैं अभी भी आशा करता हूँ कि एक दिन उन्हें इस गंभीर बात का अहसास अवश्य होगा और वे आपस में भाईयों की तरह से रहने लगेंगे।

एक साधक के रूप में मैं अपनी आत्मा के अंदर हो रही इस उथल-पुथल से बिल्कुल भी परेशान नहीं था और न ही मैं अपने उन प्रश्नों को पूछने से हिचकिचा रहा था जो कुछ अलग तरह के थे, हालांकि उनसे मुझे व्यक्तिगत रूप से कुछ परेशानी अवश्य होती थी। चलिये वैसे ये उथलःपुथल भी मेरे बड़े काम आई, जिसके कारण ही मैं रोम में सहजयोग के कार्यक्रम में बैठ कर इस दिव्य घटना का अनुभव कर रहा था। इस क्षण के बाद से सहजयोग मेरे जीवन का ध्येय बन गया। मुझे अब जाकर अहसास हुआ कि मेरा श्रीमाताजी से मिलकर उन कुछ प्रश्नों को पूछना कितनी बचकानी सी बात थी। अचानक इस बहुत सुंदर और समझ से बाहर की श्रीमाताजी से मुलाकात के बाद मेरे मन में अब कोई भी प्रश्न शेष नहीं रह गये थे। ये बड़ी ही हैरानी की बात है कि एक तार्किक दिमाग वाले व्यक्ति के साथ श्रीमाताजी की न तो कोई बातचीत हुई और न ही किसी प्रकार का विचार विमर्श ही हुआ, परंतु फिर भी मेरे प्रश्न कहीं पीछे छूट गये थे। मेरे मस्तिष्क का मेरी आत्मा में विलय हो चुका था और इन दिव्य शीतल चैतन्य लहरियों .... रूह या परमचैतन्य के प्रवाह ने स्वयं मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया था। इन सबके बीच कहीं मेरे अंतर्मन में ये दृढ़ विश्वास हो चुका था कि श्रीमाताजी ही इन दिव्य चैतन्य लहरियों की स्त्रोत हैं।

दो दिन के बाद मैं वापस बेल्जियम लौटकर आ गया और अपने पुराने दोस्तों से मिला, जो आगामी नववर्ष को मनाने को लेकर अत्यंत उत्साहित थे। लेकिन वे जानते ही नहीं थे कि अब मेरे प्लान्स एकदम बदल गये थे। मैं रोम से आकर पूरी तरह से बदल चुका था और अपने मन में पूर्णतया संतुष्ट था। अब मुझे किसी भी उत्सव को मनाने की इच्छा नहीं रह गई थी। इसके स्थान पर मैंने युक्रेन जाना ज्यादा ठीक समझा ताकि मैं सहजयोग और श्रीमाताजी के बारे में कुछ ज्यादा जान सकूँ। वैसे अभी भी मुझे श्रीमाताजी को साष्टाँग प्रणाम करने में कुछ हिचकिचाहट होती थी और अगर ईमानदारी से कहूँ तो मुझे उनको प्रणाम करने में थोड़ा डर सा लगता था। अतः मैंने निश्चय किया कि मैं उनको प्रणाम नहीं करूंगा और अधिक से अधिक ध्यान के कार्यक्रमों में जाने की कोशिश करूंगा और सहजयोग के दर्शन के बारे में और ज्यादा जानने का प्रयास करूंगा।

मैं नियमित रूप से सहजयोग के कार्यक्रमों में जाने लगा और श्री माताजी के प्रवचनों को अक्सर सुनते लगा। जैसा कि सभी सहज योगियों के साथ होता है, माँ के हर प्रवचन को सुनने के बाद मैं भी सहजयोग के दर्शन के बहुत ज्यादा करीब होता गया। हर बार जब भी मेरे मन में कुछ प्रश्न होते और

मैं उनको लेकर दुविधा में होता, तो माँ की जो अगली स्पीच मैं सुनता, उसमें मुझे अपने उन प्रश्नों के उत्तर सहज ही मिल जाया करते।

अब तक मैं समझ चुका था कि पैगम्बर मोहम्मद, ईसामसीह और श्रीकृष्ण कौन थे? मैं इंट्रॉसपेक्शन किया करता था कि क्या मैं इस बात को ठीक से समझ पा रहा हूँ? ध्यान में परमात्मा या श्रीमाताजी से पूछने पर मुझे अपने प्रश्नों के उत्तर मेरी हथेलियों पर अनुभव होने वाली शीतल चैतन्य लहरियों या परमचैतन्य के अनुसार हाँ में मिला करते थे।

मैंने सहजयोग की शूबीट तकनीक के बारे में सीखा, जिसको करने की मैं घर पर कोशिश किया करता और अब तक के अपने अनुभव से यही कह सकता हूँ कि ये सच में कार्यान्वित होता है। मेरे पहले फुटसोक से मुझे इतना आनंद मिला कि इसने मेरे सभी ऊर्जा केन्द्रों के एकदम स्वच्छ कर दिया। मंत्रों का उच्चारण करने से मुझे एक अनोखी शक्ति मिलती थी, जिससे मुझे अपने अंदर की दिव्यता का अनुभव होता था। इससे मेरे अंदर ये आत्मविश्वास जागृत हो गया कि मेरी दिव्यता से मुझे मेरी समस्त समस्याओं का समाधान मिल जायेगा। मेरे सहजजीवन में एक के बाद दूसरी कई चीजें अपने आप से होती चली गईं। एक दिन तो मैं उठा और उठते ही जाकर परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी के फोटो के आगे पूरी विनम्रता से प्रणाम करने के लिये जाकर झुक गया और उनको उस प्रत्येक चीज के लिये बारम्बार शुक्रिया कहने लगा जो सहजयोग में आने के बाद मुझे प्राप्त हुई थी। इससे मुझे अत्यंत प्रसन्नता और आराम का अनुभव हुआ, साथ ही अपने चारों ओर मुझे अत्यंत शीतल चैतन्य लहरियों की फुहारों का भी अनुभव हुआ। यही तो मैं अपने पूरे जीवन भर चाहता रहा था।

अगले ही हफ्ते या हो सकता है कि कुछ ज्यादा दिनों के बाद मैं अपनी पहली सी0बी0डी0 बेलापुर हेल्थ सेंटर (वाशी) की यात्रा पर चला गया। मैं वाशी में एक महीने से कुछ ज्यादा समय तक रहा। यहीं पर मैंने सहजयोग की बारीकियाँ सीखी जैसे विभिन्न चक्र कौन से हैं, उन चक्रों के देवता कौन-कौन से हैं और विभिन्न मंत्र कौन-कौन से हैं। आज मैं जल्दी-जल्दी वाशी जाता रहता हूँ और वहाँ के सभी सहजयोगी डॉक्टर मुझे अच्छी तरह से जानते हैं। अभी तक मेरे परिवार वालों को पता ही नहीं है कि मैं सहजयोग किया करता हूँ, परंतु मैं अक्सर अपनी उन आंटी को याद किया करता हूँ (वही आंटी जिनको मैंने अपनी रोम जाते समय हुई बीमारी के वक्त सबसे ज्यादा याद किया था) और मुझे लगता है कि शायद वही मेरे पूरे परिवार में मेरी आज की सहज लाइफ को अच्छी तरह से समझ पातीं। कभी कभार मैं अपने 6 वर्षीय बेटे को लेकर भी सहजयोग के कार्यक्रमों में आया हूँ। उसके प्रीकंडीशन्ड मन के कारण (घर के कट्टर धार्मिक विचारों के कारण) वह मुझसे सवाल भी करने लगा है कि पापा क्या हमारे यहाँ आने से अल्लाह हमसे खुश होंगे? मैंने उससे कहा करता हूँ कि अल्लाह तो हमेशा ही हमारे साथ हैं। मेरी दिली इच्छा है कि कभी मेरे बच्चे भी बिना किसी लाग लपेट के अच्छे सहजयोगी बन सकें और मैं ये भी प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपने ज्यादा से ज्यादा मुसलमान भाईयों को आत्मसाक्षात्कार

प्राप्त करने के लिये यहाँ लेकर आ सकूँ क्योंकि मुझे मालूम है कि जब भी कोई मुसलमान सहजयोग में आयेगा तो वह वास्तव में बड़ा ही समर्पित और मजबूत सहजयोगी और परमात्मा का सबसे सुंदर यंत्र बन जायेगा।

परम पूज्य श्रीमाताजी का बारंबार शुक्रिया कि आज मुझे मालूम है कि जिहाद का सच्चा अर्थ ध्यान, फुटसोक करना और अपने अंदर की नकारात्मक प्रवृत्तियों पर स्वयं विजय पाना है। यह बात पैगंबर मोहम्मद के दर्शन के साथ एकदम मेल खाती है कि सबसे मुश्किल जिहाद अपने अंदर की नकारात्मकताओं को मारना है। यही असली जिहाद है। किसी को मारने के लिये हथियार उठाना बहुत आसान है जबकि अपने अंदर की कमियों को ठीक करना, धार्मिक और अबोध बनना सबसे ज्यादा मुश्किल है।

(मिखाइल उस्मानेव भैया 7 से 8 वर्ष पुराने सहजयोगी हैं और सामूहिकता, सहजयोग के कार्यक्रमों और भारतवर्ष की गुप्त यात्राओं पर (खासकर वाशी जाना) जाना उनको बहुत पसंद हैं। जब भी वे वाशी से अपने घर वापस जाते हैं तो उनसे उनकी माँ पूछती हैं कि क्या बात है बेटा भारत से आकर तुम्हारा चेहरा बहुत ज्यादा चमकने लगता है। इसके उत्तर में वे केवल मुस्कुरा भर देते हैं और मन ही मन परम पूज्य श्रीमाताजी को उनके द्वारा दिये गये अनेकों आशीर्वादों के लिये हार्दिक आभार भी व्यक्त करते हैं।)